4.5.7 FAQ

← FAQ

विगत वर्षों में किसानों द्वारा शुष्क बागवानी की उन्नत तकनीकीयों से संबंधित बारंबार पूछे जाने वाले प्रश्न

प्रश्न 1: गर्म-शुष्क क्षेत्रों में कौन-कौन से फल वृक्ष लगाये जा सकते है ?

● बेर, अनार, बेलपत्र, खजूर, फालसा, लसोड़ा, किन्नो, मौसमी, नींबू, करौंदा, आंवला आदि फल वृक्ष लगाये जा सकते है।

प्रश्न 2: गर्म-शुष्क क्षेत्रों के लिए बेर की कौन-कौन सी किस्में उपयुक्त है ? और उनके पौधे कब और कहाँ मिल सकते है ?

● बेर की गोला, सेब, उमरान, थारसेविका, थारभूभराज, गोमाकीर्ति, कैथली, मुंडिया, बनारसी कड़ाका आदि उन्नत किस्में उपयुक्त है। इसके उन्नत पौधे जुलाई-अगस्त के महिने में केन्दीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर (राजण्) से उचित दाम पर प्राप्त किये जा सकते है।

प्रश्न 3: अगर हम स्वयं बेर की उन्नत किस्म तैयार करना चाहे तो किस प्रकार से तैयार कर सकते हैं ?

● देषी झरबेरी/बोरडी के 4–6 महीने पुराने मूलवृंतों पर उन्नत किस्मों के पैबन्द चढ़ाकर (बडिंग)

4.5.7 FAQ

← FAQ

प्रश्न 4: बेर के पौधे लगाने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

- रोपड़ सबसे उपयुक्त समय वर्षा ऋतु (जुलाई-अगस्त) होता है। सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो बसंत ऋतु (फरवरी-मार्च) में भी पौध रोपण किया जा सकता है।
- वर्षा ऋतु के एक माह पूर्व ही 60 ग 60 ग 60 सेमी. आकार के गड्ढे खोद, 2 टोकरी सड़ी हुई गोबर की खाद व 50 ग्राम मेलाथीयोन (5:) पाउडर को मिट्टी में मिलाकर अच्छी तरह भर कर अच्छी सिंचाई करें तथा वर्षा ऋतु में पौध रोपण कर हल्की सिंचाई करें।

प्रश्न 5: बेर के पौधो की सिंचाई कब और कैसे करनी चाहिए और किन-किन बातो का ध्यान रखना चाहिए ?

- बेर के नये पौधे (बाग) स्थापित करने के लिए प्रथम वर्ष में सिंचाई की अधिक आवश्यकता पड़ती है।
- फूल आने से पहले व फल बनने की अवस्था पर 15–20 दिन के अंतराल पर दो-तीन बार सिंचाई करना लाभप्रद होता है।
- मार्च-अप्रेल में बेर के पौधों में सिंचाई नहीं करनी चाहिए इससे फलों की परिपक्वता में देरी तथा

4.5.7 FAQ

← FAQ

● एक सीधे बढ़ने वाले मुख्य तने पर भूमि की सतह से 30–40 सेमी. ऊँचाई पर समान दूरी पर एवं चारों दिशाओं में फेलने वाली 3 या 4 शाखाओं को बढ़ने देना चाहिए।

● पैबन्द लगे स्थान के नीचे मूलवृंत वाले हिस्से से तथा अन्य अवांछनीय स्थान से निकलने वाली टहनियों को समय-समय पर काटते रहना चाहिए।

● मुख्य शाखाओं पर 3–4 द्वितीय सीधे बढ़ने वाली शाखाओं को छोड़कर कटाई-छंटाई करते हैं जिनसे तृतीय शाखाएं निकलती हैं।

● बीमारियों के प्रकोप से बचाव के लिये शाखाओं के कटे हुए सिरों पर फफूंदनाशी (ब्लू कापर या ब्लाइटाक्स-50) का लेप कर देना चाहिए। काट-छांट के लिये तेजधार वाले औजार का प्रयोग करना चाहिए जिससे शाखा क्षतिग्रस्त न हो।

प्रश्न 8: बेर के फलों में फल मक्खी एवं फल छेदक कीड़े के नियन्त्रण के लिए क्या करे?

● बेर के पेड़ों में अधिकांशतः (75 प्रतिशत) फूल आ गये हों और फल बनने शुरू हो गये हों, उस समय मोनोक्रोटोफास कीटनाशक का (0.03 प्रतिशत) घोल का पहला छिड़काव करना चाहिए।

● इसके पश्चात् 10–15 दिन के अन्तराल पर (0.05 प्रतिशत फेनथियान) का दूसरा छिड़काव

4.5.7 FAQ

← FAQ

प्रश्न 6: बेर के पौधे की अच्छी वृद्धि एवं अधिक उत्पादन के लिए खाद एवं उर्वरको का उपयोग कैसे करे ?

- खाद एवं उवर्रकों की सही मात्रा का निर्धारण मिट्टी के परीक्षण के पश्चात् ही करना ठीक रहता है।
- सामान्यतः प्रथम वर्ष में वर्षा ऋतु के समय 10–15 किग्रा सड़ी हुई गोबर की खाद एवं 100 ग्राम नत्रजन, 50 ग्राम फॉस्फोरस तथा 50 ग्राम पोटाश प्रत्येक पौधे को देना चाहिए।
- नत्रजन को दो भागों में बांटकर पौध वृद्धि एवं फलन दोनों अवस्था में देना उचित होता है।
- दूसरे वर्ष से खाद एवं उर्वरक की उपर्युक्त मात्रा को प्रति वर्ष इसी अनुपात में बढ़ाकर देना चाहिए जिससे पांचवे वर्ष में प्रत्येक पौधे को 50–75 किग्रा. गोबर की सड़ी हुई खाद, 500 ग्राम नत्रजन, 250 ग्राम फॉस्फोरस एवं 250 ग्राम पोटाश उपलब्ध हो जाये।

प्रश्न 7: बेर के पौधे की कंटाई-छंटाई कब करना चाहिए। कंटाई-छंटाई की विधि एवं इसमे ध्यान रखने वाली प्रमुख बाते कौन-कौन सी है ?

- प्रारम्भ के दो-तीन वर्षो में पौधों का ढांचा मजबूत करने के लिये उनकी संधाई की जाती है। उसके बाद प्रत्येक वर्ष फल तुड़ाई के बाद मई माह